

खेती दुनिया

KHETI DUNIYAN, PATIALA

भारत का एक सुप्रसिद्ध हिन्दी
कृषि समाचार-पत्र (न्यूज़ पेपर)

www.khetiduniyan.in

BOOK POST – PRINTED MATTER



All Subject to Patiala Jurisdiction.

• Issue Dated 22-06-2024 • Vol. 8 No. 25 • H.O. : KD Complex, Gaushala Road, Patiala-147001 (Pb.) Ph. : 0175-2214575 • Page : 08 E-mail : khetiduniyan1983@gmail.com

केन्द्र सरकार द्वारा खरीफ ऋतु की 14 फसलों के न्यूनतम समर्थन मूल्य (एम.एस.पी.) का ऐलान

धान का एम.एस.पी. 117 रुपये प्रति किंवंटल बढ़ाया

गत दिनों एमएसपी वृद्धि की घोषणा करते हुए, सूचना एवं प्रसारण मंत्री श्री वैष्णव ने कहा कि मंत्रिमंडल ने कृषि लागत और मूल्य आयोग (सीएसीपी) की सिफारिशों के आधार पर 14 खरीफ फसलों के लिए न्यूनतम

पी.) 5.35 प्रतिशत बढ़ाकर 2300 रुपये प्रति किंवंटल कर दिया। धान के समर्थन मूल्य में बढ़ोत्तरी सरकार के पास अधिशेष चावल भंडार होने के बावजूद हुई है।

अनाज में, 'हाइब्रिड' ज्वार

प्रति किंवंटल और मक्का का 135 रुपये बढ़ाकर 2,225 रुपये प्रति किंवंटल कर दिया गया है।

दालों के आयात पर देश की निर्भरता कम करने के लिए, 2024-25 खरीफ विपणन सत्र के लिए अरहर

एम.एस.पी. में शामिल हैं 23 फसलें

- 7 प्रकार के अनाज (धान, गेहूं, मक्का, बाजरा, ज्वार, रागी और जौ)
- 5 प्रकार की दालें (चना, अरहर/तुअर, उड़द, मूँग और मसूर)
- तिलहन (रेपसीड—सरसों, मूँगफली, सोयाबीन, सूरजमुखी, तिल, कुसुम, निगर सीड)
- व्यावसायिक फसलें (कपास, गन्ना, खोपरा, कच्चा जूट)



समर्थन मूल्य को मंजूरी दी गयी है।

श्री वैष्णव ने कहा कि 'सामान्य' ग्रेड धान के लिए एमएसपी 117 रुपये बढ़ाकर 2,300 रुपये प्रति किंवंटल कर दिया गया है, जबकि 'ए' ग्रेड किस्म के लिए इसे आगामी खरीफ मौसम के लिए 2,320 रुपये प्रति किंवंटल कर दिया गया है।

गत दिनों केन्द्र सरकार ने खरीफ विपणन सत्र 2024-25 के लिए धान का न्यूनतम समर्थन मूल्य (एम.एस.

पी.) के लिए एमएसपी 191 रुपये बढ़ाकर 3,371 रुपये प्रति किंवंटल कर दिया गया है, जबकि 'मालदानी' किस्म के लिए इसे 2024-25 विपणन सत्र (अक्टूबर-सितंबर) के लिए 196 रुपये बढ़ाकर 3,421 रुपये प्रति किंवंटल कर दिया गया है।

वर्ष 2024-25 के लिए बाजरे का समर्थन मूल्य 125 रुपये बढ़ाकर 2,625 रुपये प्रति किंवंटल, रागी का 444 रुपये बढ़ाकर 4290 रुपये

का एमएसपी 550 रुपये बढ़ाकर 7,550 रुपये प्रति किंवंटल, उड़द का 450 रुपये बढ़ाकर 7,400 रुपये प्रति किंवंटल और मूँग का 124 रुपये बढ़ाकर 8,682 रुपये प्रति किंवंटल कर दिया गया है।

इसी तरह, आगामी खरीफ सत्र के लिए सूरजमुखी बीज (तिलहन) का समर्थन मूल्य 520 रुपये बढ़ाकर 7,280 रुपये प्रति किंवंटल, मूँगफली

फसल	2024-25	2023-24	बढ़ोत्तरी
धान (सामान्य)	2300	2183	117
धान (ग्रेड ए)	2320	2203	117
ज्वार (हाइब्रिड)	3371	3180	191
ज्वार (मलदानी)	3421	3225	196
बाजरा	2625	2500	125
रागी	4290	3846	444
मक्का	2225	2090	135
तूअर/अरहर	7550	7000	550
मूँग	8558	8682	124
उड़द	7400	6950	450
मूँगफली	6783	6377	406
सूरजमुखी	7280	6760	520
सोयाबीन	4892	4600	292
तिल	9267	8635	632
नाइजरसीड	8717	7734	983
कपास	7121	6620	501
कपास (लोंग स्टेपल)	7521	7020	501

(बढ़ोत्तरी रुपयों में)

का 406 रुपये बढ़ाकर 6,783 रुपये प्रति किंवंटल, सोयाबीन (पीला) का 292 रुपये बढ़ाकर 4,892 रुपये प्रति किंवंटल कर दिया गया है। तिल का समर्थन मूल्य 632 रुपये बढ़ाकर 9,267 रुपये प्रति किंवंटल और नाइजरसीड का 983 रुपये बढ़ाकर 8,717 रुपये प्रति किंवंटल कर दिया गया है।

वाणिज्यिक फसलों के मामले में, कपास का समर्थन मूल्य 501-501 रुपये बढ़ाकर 'मीडियम स्टेपल' के लिए 7,121 रुपये प्रति किंवंटल और 'लोंग स्टेपल' किस्म के लिए 7,521 रुपये प्रति किंवंटल कर दिया गया है।

वैष्णव ने कहा कि, "पहले

दो कार्यकालों में सरकार ने अर्थव्यवस्था और किसानों के कल्याण के लिए एक मजबूत आधार बनाया। उस मजबूत आधार पर हम एक अच्छी छलांग लगा सकते हैं। किसानों पर ध्यान केंद्रित करते हुए नीति में निरंतरता है।"

सरकार के अनुसार, किसानों को उनकी उत्पादन लागत पर अपेक्षित मार्जिन बाजरा (77 प्रतिशत) के मामले में सबसे अधिक होने का अनुमान है, इसके बाद तुअर (59 प्रतिशत), मक्का (54 प्रतिशत) और उड़द (52 प्रतिशत) का स्थान है।

एक सरकारी बयान में कहा गया है कि बाकी फसलों के लिए,

घर की छत पर बना दिया बोनसाई का छोटा जंगल

मध्य प्रदेश के जबलपुर के एक पूर्व सरकारी कर्मचारी ने अपने घर की छत पर गमलों में पीपल और बरगद जैसी प्रजातियों सहित लगभग 2500 बोनसाई पौधे लगाकर एक 'छोटा जंगल' जैसा तैयार किया है।

सोहनलाल द्विवेदी (74) ने बताया

कि, "मैं पिछले 40 वर्ष से बोनसाई की बागवानी कर रहा हूं।" करीब डेढ़ दशक पहले मध्य प्रदेश राज्य विद्युत मंडल से सेवानिवृत्त हुए द्विवेदी ने कहा कि उन्होंने 40 प्रकार के पौधे और पेड़ उगाए हैं, जिनमें पीपल और बरगद जैसी फिक्स प्रजातियों के उप-समूह से 25 पौधे शामिल हैं।

बोनसाई छोटे वृक्षों को कहा जाता है और यह पेड़ तैयार करने की एक जापानी कला है। उन्होंने कहा कि वह शैक्षणिक संस्थानों में छात्रों को बोनसाई विकसित करने के तरीके के बारे में मुफ्त जानकारी देते हैं।



फलदार पौधों में मिट्टी एवं पत्ती जांच क्यों, कैसे और कब करवाएं?



डॉ. ममता फौगाट, डॉ. मुरारी लाल, डॉ. मीनू
डॉ. गुलाब सिंह और डॉ. करिश्मा नंदा, चौ. चरण सिंह
हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, कृषि विज्ञान केन्द्र, भिवानी-127021

फलों की उत्पादकता में बढ़ोत्तरी के लिए पौधों का समृच्छित विकास आवश्यक होता है। पौधों में पोषक तत्वों की जरूरी एवं संतुलित मात्रा की उपलब्धता बहुत जरूरी होती है। इसलिए फलदार पौधों में इन पौष्टक तत्वों की उपलब्धता की सही जांच मिट्टी एवं पत्ती जांच द्वारा को बेहतर दर्शन में मदद करता है,



प्राप्त की जा सकती है। मिट्टी और पत्तियों के नमूनों की रासायनिक जांच क्योंकि यह दिखाता है कि पौधे में क्या हो रहा है। मिट्टी जांच से पता निष्कक्ष मार्गदर्शक है, जिनसे सबसे उपयुक्त फलोत्पादन रासायनिक खाद्य चुनने में सहायता मिलती है। यदि उर्वरक कार्यक्रम जांच संबंधी परिणामों पर आधारित हो, तो काफी हद तक पैसा बचाया जा सकता है और फलों की गुणवत्ता में सुधार किया जा सकता है।

मिट्टी जांच के अंकड़ों का उपयोग पत्ते जांच के समान उद्देश्य के लिए नहीं किया जाता है। पौधे लगाने से पहले मिट्टी जांच का ही उत्तम उपयोग किया जाता है। खेत में पौधारोपण से पहले मिट्टी का पी. एच. उसके नमक की मात्रा और फास्फोरस एवं पोटाश के अंश में आसानी से हेर-फेर किया जा सकता है। रोपे गए क्षेत्र में मिट्टी जांच से



चलता है कि पौधों के पोषक तत्वों के पोषक तत्वों के भंडार में क्या हो रहा है।

मिट्टी का नमूना लेने की विधि

फलदार पौधे लगाने के लिए

सारणी-1 : पत्तियों का नमूने लेने की विधियां

क्र. सं.	फलदार पौधा	मौसम	पत्तों का प्रकार एवं अवस्था/उम्र	नमूने का आकार	नमूना लेने की विधि
1.	आम	मार्च-अप्रैल	पत्तियां बिना फल वाली, 5-7 महीने की उम्र वाली वाली शाखा से लें।	30 पत्तियां	हर एक पौधे से चारों दिशाओं से ऊंचाई से 4-8 पत्तियां लें।
2.	बेर	नवम्बर से जनवरी के महीने के बीच	5-7 महीने की उम्र वाली टहनी के मध्य भाग से लें।	70-80 पत्तियां	हर टहनी से एक पत्ती लें। नमूना डायगनल विधि से लें या पूरे बाग के 10-20 प्रतिशत पौधों से नमूना लें।
3.	नाशपाती	जुलाई-सितम्बर महीनों के दौरान	4-6 महीने की उम्र वाली टहनी के मध्य भाग से लें।	50-60 पत्तियां	हर टहनी से एक पत्ती लें। नमूना डायगनल विधि से लें या पूरे बाग के 10-20 प्रतिशत पौधों से नमूना लें।
4.	आलूबुखारा	मई-जुलाई महीनों के दौरान	3-4 महीने की उम्र वाली मध्य टहनी के पत्ते लें।	100 पत्तियां	हर टहनी से एक पत्ती लें। नमूना डायगनल विधि से लें या पूरे बाग के 10-20 प्रतिशत पौधों से नमूना लें।
5.	आडू	मध्य मई-जुलाई	3-5 महीने की उम्र वाली टहनी के मध्य भाग से लें।	100 पत्तियां	हर टहनी से एक पत्ती लें। नमूना डायगनल विधि से लें या पूरे बाग के 10-20 प्रतिशत पौधों से नमूना लें।
6.	अमरुद	जुलाई-अगस्त	5-7 महीने की उम्र वाली बिना फल वाली शाखा के मध्य भाग से लें।	50-60 पत्तियां	हर टहनी से एक पत्ती लें। नमूना डायगनल विधि से लें या पूरे बाग के 10-20 प्रतिशत पौधों से नमूना लें।
7.	नीबू जाति के फल	बसंत ऋतु (सितम्बर-अक्टूबर)	बिना फल वाली 4-7 महीने की उम्र वाली शाखा से लें।	25 पेड़ों से लें	एक एकड़ से 4-5 पत्ते प्रति पौधा सभी दिशाओं से लें।
8.	अंगूर	अप्रैल माह में	फल आने पर गुच्छे के सामने वाले पत्ते के डंठल से लें।	80-100 पेड़ों के डंठल से लें	पूरे क्षेत्र से इधर उधर की बिलों से लें।

भूमि का 2 मीटर की गहराई तक नमूना लें, क्योंकि ऊपरी सतह के नीचे की मृदा के पोषक तत्वों की मात्रा फलदार पौधों के लिए बहुत महत्वपूर्ण होती है। इसलिए बाग लगाने से पहले मृदा परीक्षण करवा लेना आवश्यक है। मिट्टी के नमूने निम्नलिखित विधि द्वारा लेने चाहिए :

1. ऊपरी 15 सैटीमीटर, 15 सैटीमीटर से 30 सैटीमीटर, 30 सैटीमीटर से 60 सैटीमीटर, 60 सैटीमीटर से 90 सैटीमीटर, 90 सैटीमीटर से 120 सैटीमीटर, 120 सैटीमीटर से 150

नाम, गांव का नाम एवं किला नंबर भी अवश्य लिखें। मिट्टी परीक्षण चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार के मृदा विभाग में करवाया जा सकता है।

पत्तियों का नमूना लेने की विधियां :

पौधों में पोषक तत्व की कमी, अधिकता व उनमें पोषक तत्वों की वैधिकी के बारे में जाते हैं। मिट्टी के हर एक नमूने पर नमूना नंबर व गहराई अवश्य लेना चाहिए। किसान का नाम, पिता का नाम, गांव का नाम एवं किला नंबर भी अवश्य लिखें। मिट्टी परीक्षण चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार के मृदा विभाग में करवाया जा सकता है।

सूक्ष्मजीवों और पौधों के प्रोटीन से दूध बनाने की गति तेज कर सकता है बायोटेक कम्पनियां गायों के बिना दूध बनाने की कोशिश कर रही

अमेरिका के डेयरी फॉमों में गाय एवियन डफ्लूएंजा की बीमारी के बीच कुछ कम्पनियां अब बिना गाय के ही जैविक दूध बनाने का प्रयास कर रही हैं। कुछ जैनेटिक इंजीनियर दूध के लिए गायों से छुटकारा पाने के तरीकों पर काम कर रहे हैं। वे खमीर और पौधों को गोजातीय जीन के साथ इंजीनियर करके ऐसा कर रहे हैं। उनका मकसद कम्पनी में ऐसा दूध के रंग, स्वाद और पोषण स्तर के बराबर का हो। जैनेटिक इंजीनियर जिस प्रोटीन की नकल कर रहे हैं, वो कैसिन है।



सबसे ज्यादा पाया जाता है। यही पिज्जाचीज को लचीला बनाता है और मट्टा में ऐमीनो एसिड के रूप में मिलता है। 2019 में

स्थापित इजरायली कम्पनी रेमिल्क कृत्रिम दूध बनाने में काफी आगे बढ़ चुकी है। रेमिल्क ने खमीर को इस तरह से तैयार किया है कि यह कीटा-लैक्टोग्लोबुलिन (मट्टे का मुख्य घटक) का उत्पादन कर रही है। कम्पनी के सह-संस्थापक ओरी कोहावी कहते हैं कि उनकी एक बायोटेक फैक्ट्री 50 हेक्टर से एक लाख गायों की जरूरत को खत्म कर सकती है। रेमिल्क पनीर, आइसक्रीम और दूध से बने अन्य खाद्य पदार्थ बनाने के लिए वनस्पति तेलों और चीनी के

सोयाबीन से भी दूध बनाया जा रहा

सैन फ्रांसिस्को की एक बायोटेक कम्पनी अल्पाइन बायो (नेबेल फूड्स) में शोधकार्ताओं ने सोयाबीन को कैसिन बनाने के लिए तैयार किया है। अल्पाइन की सी.ई.ओ. मैरी रिचानी कहती है कि बिक्री के लिए अभी तक मंजुरी नहीं मिली है, लेकिन इसके लिए पौधे पहले से ही उगाए जा रहे हैं। रिचानी ने सोयाबीन को इसलिए तुना, क्योंकि वे पहले से ही एक प्रमुख कमोडिटी हैं और प्रोटीन का सबसे सस्ता स्रोत है। वे कहती हैं, “हम उन किसानों के साथ काम कर रहे हैं, जो पहले से ही पशुओं के चारे के लिए सोयाबीन उगा रहे हैं।”

सघन एवं एकफसली कृषि प्रणाली, संकर किस्मों तथा रासायनिक खादों के अत्याधिक प्रयोग के कारण फसलों में कीट व बीमारियों का प्रकोप बना ही रहता है। इसके अलावा अगर मौसम अनुकूल हो तो ये समस्याएं और भी अधिक बढ़ जाती हैं तथा कई बार तो पूरी की पूरी फसल भी बर्बाद हो जाती है। वैसे तो कीट व बीमारियों के प्रबंधन के बहुत उपाय हैं। लेकिन किसान प्रायः रासायनिक जीवनाशकों पर ज्यादा निर्भर रहते हैं। परन्तु रासायनिक जीवनाशकों के अत्याधिक व अंधाधुंध प्रयोग से हमारे वातावरण पर तो बुरा असर पड़ता है, इसके अलावा नाशीजीवों में भी रासायनिक जीवनाशकों के अलावा और भी काफी महत्वपूर्ण उपाय हैं, जिनमें सस्य क्रियाएं प्रमुख हैं। कुछ महत्वपूर्ण सस्य क्रियाओं का संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है।

खेत की गहरी जुताई : फसल कटाई के उपरांत खास कर गर्मियों में खेत की गहरी जुताई करके तथा कुछ दिनों तक खाली छोड़ देने से भूमि में फसलों की जड़ों व अवशेषों में विद्यमान कीटों की विभिन्न अवस्थाएं ऊपर आ जाती हैं, जो काफी संख्या में या तो धूप व अत्याधिक तापमान की वजह से ही मर जाती है या फिर पक्षी तथा दूसरे मित्र कीट उन्हें खा जाते हैं। इसी प्रकार अनेक भूमि जनित रोगों के जीवाणु/विषाणु भी कड़ी धूप के कारण नष्ट हो जाते हैं। यह विधि कटुआ सुंडी, सफेद लट, बाजरा का अस्तर रोग व डाऊनी मिल्ड्यू रोग तथा गेहूं का मोल्या रोग के नियंत्रण में काफी सहायक



कीट व रोग प्रबंधन में सस्य क्रियाओं का महत्व

होता है। दूसरी ओर पिछेती बुवाई करने से कपास में गुलाबी सुण्डी व सफेद मक्खी, सरसों में चेपा व सफेद रतुआ, चने में अमरीकन सुण्डी की समस्या बढ़ जाती है। इसलिए यदि इन हानिकारक जीवों की अवस्थाओं को ध्यान में रख कर फसल की बुवाई की जाए तो इनसे होने वाले नुकसान को काफी कम किया जा सकता है।

कीट व रोग रोधी/रोग मुक्त बीज का चुनाव : जहां तक सम्भव हो सके, किसानों को अपने क्षेत्र के अनुसार ऐसी किस्मों/संकर बीज का चुनाव करना चाहिए, जिनमें या तो कीट/बीमारियों का प्रकोप बहुत ही कम होता हो या फिर उनमें इनको सहन करने की ताकत हो। जैसे बीं

भूपेन्द्र सिंह व सतीश कुमार, साझना नेहवाल कृषि प्रौद्योगिकी, प्रशिक्षण एवं शिक्षा संस्थान, विस्तार शिक्षा निदेशालय, चौ. चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार एवं राम करण गौड़, ज़िला विस्तार विशेषज्ञ (कीट विज्ञान), कृषि विज्ञान केन्द्र, रोहतक, चौ. चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार

हो ना कि नाशीजीवों को।

सिंचाई : सिंचाई फसल की मूलभूत आवश्यकता है, लेकिन अधिक सिंचाई करने से या फसल में सोखा आने से भी कीटों व बीमारियों की फसल के बचे हुए अवशेषों से शुरू होता है, जैसे कपास में गुलाबी सुंडी, सरसों में धोलिया कीट, धान का जड़ गलन रोग आदि। इसी प्रकार

मात्रा में पानी देना चाहिए।

खेत की साफ-सफाई : कुछ कीट व बीमारियों का प्रकोप पिछली फसल के बचे हुए अवशेषों से शुरू होता है, जैसे कपास में गुलाबी सुंडी, सरसों में धोलिया कीट, धान का जड़ गलन रोग आदि। इसी प्रकार



है। इसके अलावा खेत की गहरी जुताई करने से भूमि में हवा का संचार होता है और इसकी पानी को सोखने की क्षमता बढ़ती है, जिसके कारण भूमि की उपजाऊ शक्ति भी भी बढ़ावा मिलता है।

फसल-चक्र : एक ही प्रकार की फसल या उसी कुल की फसल को एक ही खेत में बार-बार बोने से कीटों व बीमारियों का प्रकोप काफी बढ़ जाता है। इस समस्या के समाधान के लिए फसल-चक्र एक व्यवहारिक तथा प्रभावशाली तकनीक है। इसलिए फसल-चक्र अपनाएं, यानि एक कुल की फसल के बाद दूसरे कुल की फसल की बुवाई करें। इससे न केवल कीटों व बीमारियों से बचाव होगा, बल्कि खेत की ज़मीन का भी सुधार होगा। फसल-चक्र अपनाने से कपास का जड़ गलन रोग, मूँगफली में सफेद लट, चने का अंगमारी रोग, गेहूं का मोल्या रोग आदि को काफी हद तक कम किया जा सकता है।

बुवाई/रोपाई का उचित समय : प्रायः फसलों की बुवाई का समय इस प्रकार निर्धारित करना चाहिए कि फसल हानिकारक कीटों व जीवाणु/विषाणु के प्रकोप से बच सके या उनका मुकाबला कर सके। प्रत्येक कीट या जीवाणु/विषाणु के प्रकोप का प्रायः एक निश्चित समय होता है, जब वो फसल को अधिकतम नुकसान पहुंचाता है। जैसे फसल की अगेती बुवाई करने से धान की जीवाणुज पत्ता अंगमारी, चने का उखेड़ा रोग आदि का प्रकोप ज्यादा

विभिन्न तरह के खरपतवारों व परपोषी पौधों पर कई प्रकार के कीट व बीमारियां पनपते रहते हैं। अतः खेत की साफ-सफाई बहुत ज़रूरी है। इसके लिए पिछली फसल के अवशेषों का उचित प्रबंधन करना चाहिए तथा समय-समय पर अनावश्यक पौधों को नष्ट करते रहना चाहिए।

कीट व रोग ग्रसित पौधों को नष्ट करना : कीटों व बीमारियों के उचित प्रबंधन के लिए उनके प्रकोप पर निगरानी रखना अत्यन्त आवश्यक है। इसके लिए सप्ताह में कम से कम एक बार पूरे खेत का भ्रमण करें तथा जहां कहीं भी कोई पौधा कीट या बीमारी ग्रसित दिखाई दे, तो उसे नष्ट कर दें ताकि उस कीट या बीमारी के प्रकोप को आगे बढ़ने से रोका जा सके। यह विधि बीमारियों के संदर्भ में विशेष रूप से उपयोगी है। उदाहरण के लिए सरसों का चेपा, कपास की चित्तीदार व गुलाबी सुंडी, गने का तराई बेधक, कपास व मूँग का मरेड़िया रोग, बाजरा का डाऊनी मिल्ड्यू व अस्तर रोग, धान का बकाने रोग आदि को इस विधि द्वारा काफी हद तक कम किया जा सकता है।

इस प्रकार इन सस्य क्रियाओं के अलावा और भी बहुत सारी क्रियाएं हैं, जिनको अपनाकर किसान भाई अपनी फसल को कीट व बीमारियों के प्रकोप की वजह से होने वाले नुकसान से काफी हद तक बचा सकते हैं। □

आपकी फसल की सुरक्षा ... कोपल के साथ

Ph. : 9592064102 www.coplgroup.org
E-mail : info@coplgroup.org

खेती दुनिया

KHETI DUNIYAN

मुख्य कार्यालय

के.डी. कॉम्प्लैक्स, गुरुग्राम रोड, नजदीक शेरे पंजाब मार्केट, पटियाला - 147001 (पंजाब)

फोन : 0175-2214575

मो. 90410-14575

E-mail : khetiduniyan1983@gmail.com

वर्ष : 08 अंक : 25

तिथि : 22-06-2024

सम्पादक

जगप्रीत सिंह

मुख्य शाखाएं

पटियाला

फोन : 0175-2214575

मो. 90410-14575

मुम्बई

दिल्ली

लुधियाना

बठिंडा

सम्पादकीय बोर्ड

डॉ. डी.डी. नारंग

डॉ. जे.एस. डाल

डॉ. आर.एम. फुलझेले

कम्पोजिंग

एकता कम्प्यूटरज़ पटियाला

मौसम का मिजाज बहुत तेज़ी से बदल रहा है। बदलते मौसम की इस तेज़ रफतार ने आदमी ही नहीं पेड़-पौधों, पशु-पक्षियों और छाँटे-छाटे जीव-जंतुओं तक को हैरत में डाल दिया है। इन दिनों पूरे भारत में इतनी तेज़ गर्मी पड़ रही है कि लगता है मानो आसमान से आग बरस रही हो। उत्तर और मध्य भारत में देर रात 8-9 बजे भी लू के गर्म थेपेड़ लग रहे हैं। मौसम की इस दबंगई ने लोगों को ही नहीं, पशुओं को भी

बड़े डरावने संकेत दे रहा है मौसम का बदलता रुख

वीना गौतम

बदल गया है। अब दिसंबर से फरवरी तक ही ठंड पड़ती है, वह भी पहले की तुलना में काफी कम। मौसम की इस गडबड़ी से फसलों की बुवाई और कटाई के समय पर भी फर्क पड़ रहा है। उत्तर और मध्य भारत के करीब 230 ज़िले सूखा संभावित ज़िलों में शामिल हो गए हैं।

मौसम के इस बदलते मिजाज के बढ़ते खतरों से पूरी दुनिया जूँझ रही है। क्योंकि मौसम वैज्ञानिकों के अनुसार पृथ्वी का तापमान पिछले सौ वर्षों के दौरान करीब 1.2 डिग्री सेंटीग्रेड तक बढ़ गया है। इस बदलते मौसम के कारण जलवायु परिवर्तन अवश्यंभावी हो गया है। लेकिन इन सभी समस्याओं के लिए इंसान अनिवार्य रूप से जिम्मेदार है, वैज्ञानिक यह मानते हैं। वास्तव में पूरी दुनिया



बन कर टूटता है, तो चीन एक साथसूखे और बाढ़ की चेपेट में आ जाता है। अपने देश में भी समुद्री तूफानों की संख्या और तबाही दिनों-दिन बढ़ती जा रही है। इन पंक्तियों के लिखे जाने के समय भी कोलकाता रेमल जैसे चक्रवाती

बचैन कर दिया है। शहरों में आवारा कुते इस गर्मी से भुने जा रहे हैं। प्रशासन को बार-बार रैड अलर्ट जारी करना पड़ रहा है। मौसम के तेवर को समझने वाले विशेषज्ञ इस आग बरसती गर्मी में बच्चों और बुजुर्गों को खास तौर पर घर से बाहर न निकलने की हिदायतें दे रहे हैं। बीच-बीच में कहीं-कहीं बारिश के कारण एकाध दिन को तेज़ गर्मी से राहत मिलती है और एकाएक मौसम का मिजाज बदल जाता है। लेकिन सिर्फ एक या दो दिन के लिए बारिश के कारण सुहावना हुआ, मौसम अंगू-मिचौली साबित होता है। वास्तव में मौसम के इस डरावने बदलाव ने बहुत कुछ बदल दिया है। वैसे यह हैरान करने वाला बदलाव इसी साल देखने को नहीं मिला। मौसम में इस तरह के डरावने बदलाव पिछले एक दशक से जारी है। 13 नवम्बर, 2015 को तामिलनाडू में कांचीपुरम के नजदीक वेम्बकुम कस्बे में एक ही दिन में 470 मिलीमीटर बारिश दर्ज की गई थी। इस लगातार बारिश के कारण चेन्नई के निचले हिस्से जलमग्न हो गए थे, जिस कारण करीब 1000 से अधिक लोगों को अपने घरों से निकालना पड़ा था। यह मौसम के घोर बदलाव का ही टेलर है कि हाल के सालों में नवम्बर-दिसम्बर के महीने में चेन्नई में भीषण बाढ़ आती है, लातूर, विदर्भ और कुंडलखंड जैसे क्षेत्रों में अक्सर गर्मियों पानी की त्राहि-त्राहि मच जाती है और उत्तराखण्ड में मई-जून माह में पहाड़ खिसकते हैं तथा भयानक हिमपात देखने को मिलता है। पिछले एक दशक से मौसम रह-रह कर अपने डरावने रंग दिखा रहा है। सिर्फ हम ही नहीं पूरी दुनिया मौसम के बदलते मिजाज की



तूफान की तबाही झेल रहा था। सड़कों पर जल भराव, पेड़ों का टूट कर गिरना, 135 किलोमीटर प्रति घंटे की रफतार से हवाओं का चलना तो जैसे आम हो गया है।

याद रखिए हमेशा से ऐसा नहीं था। एक समय ऐसा था जब ऋतुएं अपने समय पर आती थीं और मौसम भी समय पर ही बदलता था, लेकिन अब पूरी दुनिया में ऋतुओं का यह चक्र गड़बड़ा गया है। कहीं पर अब कड़ाके की ठंड पड़ती है, तो कहीं पर बसंत ऋतु देर से आती है, भीषण सर्दी के कारण कीट-पतंगे समय से जग नहीं पाते, जिसके कारण फूलों में समय पर परागण नहीं हो पाता, असर फसलों की उपज पर पड़ता है। गर्मी का मौसम धरती को अब बुरी तरह से तपाने और सताने लगा है।

इस मौसम के कारण अब जलस्रोत अक्सर सूख जाते हैं और सूखे की मार झेल रहे किसान बस आसमान ताकते रह जाते हैं, क्योंकि वहां बादलों का नामोनिशान नहीं रहता। बे-मौसम की बेतरतीब बारिश से अब आए साल फसलें बर्बाद हो रही हैं। शरद ऋतु का समय भी

में, दिन-रात लाखों-करोड़ों गाड़ियों और कल-कारखाने लगातार वायुमंडल में ज़हरीला धुआं छोड़ रहे हैं। समूची धरती से दुनिया में जंगलों के सफाए हो रहे हैं। आग की बढ़ती घटनाएं करेले में नीम की माफिक हैं। इस आग के कारण पूरे वायुमंडल में धुआं फैल रहे हैं। कोयले और पैट्रोलियम पदार्थों के जलने से भी वायुमंडल में ग्रीन हाउस



गैसों की मात्रा लगातार बढ़ रही है। पिछले तीन सौ सालों में ही वायुमंडल में कार्बन डाइऑक्साइड की मात्रा 30 प्रतिशत तक बढ़ चुकी है। साइबेरिया और अलास्का जैसे वन क्षेत्रों में भी आग लगने की भीषण दुर्घटनाएं हो रही हैं। धीरे-धीरे ग्लेशियर पिघल कर सिकुड़ रहे हैं। वैज्ञानिकों का अनुमान है कि हिमाचल

क्षेत्र के ग्लेशियर तेज़ी से पिघल रहे हैं। उत्तरी ध्रुव और दक्षिण ध्रुव में जमा बर्फ के बाद हिमालय में ही बर्फ के रूप में सबसे ज्यादा पानी जमा है। लेकिन बढ़ते तापमान के कारण पिछले सौ वर्षों में दुनिया में समुद्रों का जल स्तर 10 से 25 सेंटीमीटर तक बढ़ चुका है। अगर यही हाल रहा तो समुद्र तटों पर बसे शहरों के डूबने का खतरा पैदा हो जाएगा और महासागरों में स्थित तमाम द्वीप डूब जाएंगे। ग्लोबल वार्मिंग के चलते जानकारों को आशंका है कि 2050 तक पशु पक्षियों और पेड़-पौधों की लगभग 10 लाख से अधिक प्रजातियां नष्ट हो जाएंगी।

वायुमंडल की तपन से सागरों का पानी गरमाने के कारण उनमें उठने वाली भाप की मात्रा में इजाफा होने से भीषण समुद्र तूफानों की घटनाओं में लगातार बढ़ोत्तरी हो रही है। वैज्ञानिकों का अनुमान है कि वर्षा पर आधारित खेती आने वाले दशकों से आधी रह जाएगी और अकाल का साया बढ़ जाएगा। वैज्ञानिकों के लिए मौसम का बदलता मिजाज यानी जलवायु परिवर्तन भारी चिंता का विषय है। सबाल पैदा होता है कि मौसम के इस बदलते मिजाज से मानव कैसे बच सकता है। मौसम का बदलता मिजाज मनुष्य के स्वास्थ्य और उसकी खुशहाली के लिए एक बड़ी चुनौती है।

फसलों के उत्पादन, यातायात व्यवस्था और जलप्रबंधन में इसके कारण कई बाधाएं आ खड़ी हुई हैं। बदलती जलवायु के कारण मनुष्य को एक जगह से दूसरी जगह पलायन करने, बीमारी, मृत्यु और अनेक तरह की दूसरी समस्याओं के साथ-साथ हाल

के सालों में चक्रवातों, बाढ़ गर्म हवाओं और सूखे का भी सामना करना पड़ रहा है। लेकिन इंसान अब भी समझने को तैयार नहीं है कि मौसम के इस बदलते मिजाज की कारण सबसे बड़ी वजह मानव की कागजारियां ही हैं। जिन पर अगर समय रहते रोक न लगाई गई, तो मानव का अस्तित्व भी खत्म हो सकता है।

विभिन्न खंडों में कौन-कौन से फलदार पौधों के बाग लगाने चाहिए

डॉ. मुरारी लाल, डॉ. ममता फौगाट एवं डॉ. मीनू
चौ. चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, कृषि विज्ञान केन्द्र, भिवानी—127021

हरियाणा की जलवायु बहुत से प्रकार के फलदार पौधों के लिए उपयुक्त है। वर्ष 1966-67 में 7865 हैक्टेयर में बागों का क्षेत्रफल था, जोकि वर्ष 2018-19 में बढ़ कर



67165 हैक्टेयर हो गया। राज्य के किसानों की परम्परागत खेती के साथ-साथ फलों की खेती का रकबा प्रदेश में बढ़ा है। परन्तु फिर भी यह हरियाणा की कुल कृषि योग्य भूमि का बहुत मामूली सा भाग है। हरियाणा में बागवानी के लिए अनेक तरह के फलों जैसे माल्टा, नीबू, किनू, बेर, अमरुद, आम, आड़, पपीता इत्यादि की सुधरी किस्में ज्यादा लोकप्रिय हैं। इस प्रदेश में फलों की खेती के प्रसार की संभावनाएं बहुत ही अधिक हैं। विभिन्न खंडों में हमें निम्न अनुसार फलदार पौधे लगाने संबंधी सिफारिशें हैं।

क्र. सं.	खण्ड	फल
1.	पूर्वी खण्ड (क) शिवालिक पहाड़ी क्षेत्र (अर्द्ध नमी : अधिक वर्षा वाले हिस्से) कालका, नारायणगढ़, जगाधरी, करनाल, पानीपत, लाड़वा और इंद्री का कुछ हिस्सा	आम, आड़, आलुबुखारा, नाशपाती, लोकाट, लीची, चीकू, पपीता, आंवला, अमरुद, जामुन
	(ख) अलूवियल मैदानी क्षेत्र (अर्द्ध शुष्क : मध्य वर्षा वाले हिस्से) फरीदाबाद, पलवल, बलभगद, गुरुग्राम, नूह, पटौदी, सोनीपत, करनाल, पानीपत, कुरुक्षेत्र, कैथल, गुहाला, पेहवा, रोहतक और जीद का कुछ भाग।	नीबू जाति के फल, अमरुद, खजूर, जामुन, पपीता, फालसा, शहतूत, आंवला
2.	पश्चिमी खण्ड (क) अलूवियल मैदानी क्षेत्र (अर्द्ध शुष्क : मध्यम से कम वर्षा वाले हिस्से) हिसार, रोहतक, सिरसा, भिवानी ज़िले के कुछ क्षेत्र, महेन्द्रगढ़ ज़िला	नीबू, माल्टा, किनू, अमरुद, बेर, आंवला, खजूर, जामुन, अनार, बेलगिरी, शहतूत, फालसा
	(ख) रेतीले टिब्बे वाले क्षेत्र (शुष्क क्षेत्र : कम और बिल्कुल कम वर्षा वाले हिस्से) सिरसा, फतेहाबाद, हिसार, भिवानी, रेवाड़ी, महेन्द्रगढ़ का नारनौल वाला हिस्सा, ज़िलों के दक्षिण-पश्चिम हिस्से, राजस्थान सीमा के साथ लगने वाले क्षेत्र।	बेर, बेलगिरी, आंवला, अमरुद, शहतूत, फालसा, करौदा, अनार

ज्ञानेन्द्र रावत

नौतपा को विदा हुए करीब 15 दिन बीत चुके हैं लेकिन देश के उत्तरी राज्य अभी भी भीषण गर्मी से तप रहे हैं। महीनेभर से भी ज्यादा समय से अधिकतम तापमान 40 डिग्री से ऊपर बना है। राजस्थान के जैसलमेर में इस दौरान पारा 55 डिग्री सेल्सियस पहुंच गया जबकि दिल्ली में पिछले 80 साल का और पंजाब में 46 साल का रिकॉर्ड तोड़ चुका है। इस बीच दिल्ली पार की सीमा 52.9 तक पार कर चुकी है।

यही स्थिति कमोबेश देश के सभी उत्तरी राज्यों की है। गर्मी के चलते दिन में बाजारों में सन्नाटा पसरा रहता है। सड़कों पर रेहड़ी पटरी वाले ग्राहकों को तरस गये हैं। बाजार में भी ग्राहक कम हैं।



गर्मी की मार से पहाड़ और मैदानी इलाके कोई भी अछूते नहीं। इस बार तो गर्मी ने पहाड़ों पर भी रिकॉर्ड तोड़ दिया है। दिन के साथ ही रातें भी गर्मी की मार से तप रही हैं। इतिहास में पहली बार हम वैश्विक गर्मी की यह भयावहता देख रहे हैं। विश्व मौसम विज्ञान संगठन के अनुसार अगले पांच साल में पहली बार वैश्विक तापमान 1.5 डिग्री सेल्सियस तक बढ़ने के 66 फीसदी आसार हैं।

विश्व मौसम विज्ञान संगठन के अनुसार वैश्विक तापमान की

गर्मी का कहर

जीवाश्म ईंधन खपत में कमी ही बढ़ते ताप का समाधान

विश्व मौसम विज्ञान संगठन के अनुसार वैश्विक तापमान की सीमा छूने का अर्थ है कि विश्व 19वीं शताब्दी के दूसरे हिस्से के मुकाबले अब 1.5 डिग्री सेल्सियस अधिक गर्म है। दुनिया में तापमान में हो रही बेतहाशा बढ़ोतरी भयावह खतरे का संकेत है। जलवायु परिवर्तन और अलनीनो ने इसमें अहम भूमिका निभाई है। यह सब कोयला, तेल और गैस के जलाने की सभी सीमाएं पार करने का दुष्परिणाम है।

दुनिया की करीब 81 फीसदी आबादी भीषण गर्मी झेलने को विवश है। अमेरिका में भी यही हाल है जिसने माना है कि गर्मी के भीषण हालात से मरने वाले बीते दशक में दोगुने से भी ज्यादा हो गये हैं। इंसान तो इंसान, पेड़-पौधे भी बढ़ते तापमान के बीच सांस नहीं ले पा रहे हैं।

बोस्टन, कोलंबिया व विश्व मौसम विज्ञान संगठन के वैज्ञानिकों ने चेताया है कि इस गर्मी भुखमरी, सूखे और जानलेवा बीमारियों का खतरा बढ़ेगा। धरती का बढ़ता तापमान और उसकी बजह से पैदा होने वाली हीटवें दृद्य के लिए खतरनाक साबित हो रही है। हर एक डिग्री सेल्सियस की बढ़ोतरी के साथ दृद्य रोगियों की मौत का रुप में होगा। यह खतरा 60 फीसदी तक बढ़ जायेगा। दरअसल, यह खतरा बच्चों में श्वसन संबंधी बीमारियों सहित कई हानिकारक स्वास्थ्य प्रभावों के लिए सीधे तौर

पर जिम्मेदार होगा। तेज गर्मी बच्चों के दिमाग को कमजोर कर रही है।

एक अध्ययन के अनुसार संकेत मिले हैं कि जब बच्चे गर्भावस्था या शुरुआती बचपन के दौरान गर्मी के संपर्क में आते हैं तो उनके दिमाग में माइलिनेशन यानी सफेद पदार्थ का स्तर कम होता है। इससे मस्तिष्क में न्यूरोलॉजिकल तंत्र पर प्रभाव पड़ता है। यानी गर्मी से शरीर का कोई अंग प्रभावित हुए नहीं रहा है। इसके साथ ही गर्मी के बढ़ते प्रभाव से खाद्यान्न आपूर्ति पर संकट बढ़ जायेगा। इससे फसलों की कटाई, फलों का उत्पादन और डेंगरी उत्पादन सभी दबाव में हैं। बाढ़, सूखा और तूफान की बढ़ती प्रवृत्ति ने इसमें और इजाफा किया। वाशिंगटन में सेंटर फार स्ट्रेटेजिक एंड इंटरनेशनल स्टडीज के खाद्य विशेषज्ञ कैटलिन वैल्श की मानें तो इन मौसमी घटनाओं की बजह से उत्तरी अमेरिका, यूरोप और एशिया के बड़े हिस्से के किसान मुश्किल में हैं। दक्षिणी यूरोप में गर्मी के कारण गायें दूध कम दे रही हैं। इटली में अंगूर, खरबूजा, सब्जियां और गेहूं उत्पादन तक प्रभावित हुआ है। वही मछलियों का आवास भी प्रभावित हुए बिना नहीं रहा है। इससे उनकी संख्या में तेजी से गिरावट आ रही है। इससे बहुतेरी प्रजातियों के खत्म होने का खतरा बढ़ रहा है।

संयुक्त राष्ट्र की जलवायु समिति के अनुसार यदि धरती के तापमान को 1.5 डिग्री सेल्सियस पर रोकना है तो 2030 तक कार्बन उत्सर्जन को 43 फीसदी तक घटाना होगा। धरती के गर्म होने की रफ्तार अनुमान से कहीं ज्यादा है। आज धरती 1.7 डिग्री सेल्सियस तक गर्म हो चुकी है। दरअसल, समस्या की असली जड़ जीवाश्म ईंधन है जिससे हमें दूर जाने की बेद जरूरत है।

2004 में प्रोग्रेसिव बीकीपर्स एसोसिएशन गठित, शहद के कारोबारी किसानों को एक मंच पर लाई, इससे आमदनी बढ़ेगी 300 मधुमक्खी पालकों के साथ एसोसिएशन इस साल अपना ब्रांड करेगी लांच

पंजाब में 300 मधुमक्खी पालकों को अपने साथ जोड़ कर प्रोग्रेसिव बी-कीपर्स एसोसिएशन इसी साल पंजाब में शहद का अपना स्पेशल ब्रांड लांच करने की तैयारी में है।

एसोसिएशन के पंजाब प्रधान जतिंदर सिंह सोही ने बताया कि वह पिछले 2 साल से राज्य भर में लग रहे किसान मेलों में शहद का कारोबार करने वाले किसानों से शहद खरीदने वाले लोगों के टेस्ट का फीडबैक इकट्ठा कर रहे हैं। उसी के आधार पर एसोसिएशन अब इन 300 मधुमक्खी पालकों के फार्म में तैयार होने वाले शहद को मार्केट के लिए तैयार कर रही है। इसके अलावा एसोसिएशन ने अपनी वैबसाइट तैयार कर कुछ शहद तैयार करने वाले किसानों का डेटा अपलोड किया है, ताकि वे आम लोगों को ऑनलाइन शहद मुहैया करवा सकें। पिछले महीने शुरू हुए इस प्रोजैक्ट का भी बहुत अच्छा रिस्पॉन्स देखने को मिला है।

जतिंदर बताते हैं कि

मधुमक्खी पालकों को कई तरह की तकनीकी दिक्कतों का सामना करना पड़ता था। उदाहरणता, मधुमक्खियों में आम बीमारियां हो जाती थीं, जिसका असर शहद को क्वालिटी पर पड़ता था। अज्ञानता के कारण यह कारोबार घटता जा रहा था। इसके बाद वर्ष 2004 में राज्य में शहद का कारोबार करने वाले किसानों को एक मंच पर लाकर प्रोग्रेसिव बी-कीपर्स एसोसिएशन का गठन किया गया, जो अब पूरे राज्य में यह काम करने वाले किसानों को इस कारोबार से जुड़ी तकनीकी बारीकियों से अवगत करवाती है। इसका असर यह हुआ कि पिछले साल पंजाब से करीब 70 हजार मीट्रिक टन शहद का निर्यात किया गया। एसोसिएशन पंजाब एग्रीकल्चर यूनिवर्सिटी (पी.ए.यू.), लुधियाना के

माहिरों की मदद से यह आंकड़ा हर साल बढ़ाने पर भी काम कर रही है।

निर्यात शहद का 90 प्रतिशत जमा हुआ, पंजाब में किया

जा रहा जागरूक

जतिंदर के अनुसार, पंजाब में कई लोग जमे हुए शहद के बारे में गलत धारणा बनाए हुए हैं। पंजाबी आम तौर पर कहते हैं कि जमे हुए शहद में मीठा मिलाया हुआ होता है। इसके विपरीत खेती वैज्ञानिकों के मुताबिक, शहद का जमना उसका

सतुर देश बीकीपर्स प्रॉड्यूसर कम्पनी लिमिटेड, फतेहगढ़ साहिब के सदस्य है।

एसोसिएट डायरेक्टर (ट्रेनिंग) डॉ. विपन कुमार रामपाल ने मधुमक्खियों के इतिहास और महत्व पर प्रकाश डाला। एसोसिएट प्रोफैसर (पौधा संरक्षण) रीत वर्मा ने बताया कि आमतौर पर लोग मक्खियों/मधुमक्खियों द्वारा प्रदान की जाने वाली परागकण सेवा के बारे में बहुत कुछ जानते हैं, जो शहद और अन्य मधुमक्खी उत्पादों के उत्पादन से होने वाली आय की तुलना में किसान की आय को 10-20 गुना अधिक बढ़ा देती है। उन्होंने कहा कि मधुमक्खियां न केवल अपने मालिक को, बल्कि मालिक के खेतों के आस-पास खेती करने वाले कई किसानों को भी अपनी सेवा प्रदान करती है। उन्होंने शहद मधुमक्खियों के महत्व, मूल्यवान मधुमक्खी उत्पादों के उत्पादन में उनकी भूमिका और मानव जाति व खेतीबाड़ी के लाभ के लिए फसल परागण और एपीथेरेपी में शहद मधुमक्खियों की सेवाओं पर भी प्रकाश डाला। उन्होंने हानिकारक फसल खेती प्रथाओं अथवा कीटनाशक स्प्रे से उपयोगी कीड़ों को बचाने पर जोर दिया और किसानों से मधुमक्खी पालन को अंशकालिक व्यवसाय या स्वरोज़गार उद्यम के रूप में अपनाने का आग्रह किया।

इस मौके पर उक्त कम्पनी के अध्यक्ष स. कुलविंदर सिंह ने किसानों और मधुमक्खी पालकों को एफ.पी.ओ. के बारे में विस्तार से बताया। उन्होंने सभी प्रतिभागियों को मधुमक्खियों को बचाने की शपथ लेने के लिए प्रोत्साहित किया, क्योंकि हम जो भोजन खाते हैं, उसका एक-तिहाई मधुमक्खी परागकण वाली फसलों से आता है। इसके अलावा, यदि मधुमक्खियां पृथ्वी से नष्ट हो जाएं, तो मानव जाति 4 साल से अधिक जीवित नहीं रह पाएंगी।

मधुमक्खियों की परागकण सेवा किसान की आय को 10-20 गुना बढ़ा देती है : रीत वर्मा

पी.ए.यू. के कृषि विज्ञान केन्द्र, फतेहगढ़ साहिब ने विश्व मधुमक्खी दिवस पर आयोजन किया, जिसमें लगभग 40 मधुमक्खी पालक प्रशिक्षकों ने भाग लिया, जिन्होंने इस उद्यम को अपनाया हुआ है और



जैसे क्रांतिकारी नैनों उर्वरक शामिल हैं। खाद्य सुरक्षा और पर्यावरण संरक्षण के लिए उर्वरक क्षेत्र के भविष्य पर जोर देते हुए, पारम्परिक स्प्रेयर की तुलना में ड्रोन के फायदों पर प्रकाश डाला। जैसे कम पानी का उपयोग और समय दक्षता, ड्रोन के साथ केवल 5 से 7 मिनट में एक एकड़ को कवर करना। इसके अलावा उन्होंने महिला किसानों के लिए ड्रोन से आजीविका के अवसरों का भी जिक्र किया। सुखराज कोर दियोल, कृषि अधिकारी मोगा ने महिला किसानों को आर्थिक उत्थान के लिए एकजुट होने के लिए प्रेरित किया और दूसरों को विभिन्न आजीविका गतिविधियों में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित किया। ग्रांट थॉर्नटन के प्रबंधक मनप्रीत सिंह, सलाहकार संतोख सिंह, ग्रांट थॉर्नटन टीम, पंजाब बके नवनीत सिंह, साक्षी जैन और संचित शर्मा ने इस पहल के मुख्य उद्देश्य पर प्रकाश डाला।

डी.सी. कुलवंत सिंह ने कहा कि पहले का एक प्रमुख आकर्षण विकसित भारत संकल्प यात्रा थी, जिसमें किसानों की जरूरतों को पूरा करने के लिए डिज़ाइन किए गए। नवीनतम कृषि ड्रोन का प्रदर्शन किया गया था। ये ड्रोन कृषि पद्धतियों को आधुनिक बनाने और कृषि में एक स्थायी और समृद्ध भविष्य में योगदान देने में एक महत्वपूर्ण कदम का प्रतिनिधित्व करते हैं। कार्यक्रम के दोरान इफकों पंजाब के राज्य विषयन प्रबंधक हरमेल सिंह सिद्धू ने कृषि में नवाचारों पर चर्चा की, जिसमें कृषि ड्रोन, नैनों यूरिया और नैनों डी.ए.पी.

पानी की किट्टत

सियासी खींचतान में फंसी प्यासी दिल्ली

दिल्ली पीने के पानी के संकट से ज़ज़ रही है। वैसे तो दिल्लीवासियों को हर साल भीषण गर्मी के दौरान पानी की भारी किलत से जूझना पड़ता है। विडम्बना यह है कि दिल्ली सरकार और दिल्ली के उपराज्यपाल के बीच जारी रस्साकसी का खिमियाजा आम जनता को भुगतना पड़ रहा है। हालत यह है कि दिल्ली की जल मंत्री कभी दिल्ली सरकार के उपराज्यपाल जल संकट के लिए पानी की चोरी और बर्बादी को मुख्य कारण बता रहे हैं। इस बाबत हिमाचल के मुख्यमंत्री का कहना है कि हिमाचल दिल्ली सरकार के साथ किए गये समझौते के तहत दिल्ली को पानी देने के लिए प्रतिबद्ध है। जबकि सुप्रीम कोर्ट में हरियाणा सरकार द्वारा दिये गये शपथ पत्र के आंकड़ों से दिल्ली की जल मंत्री के कथन को बल मिलता है कि दिल्ली को उसके हिस्से का पर्याप्त पानी नहीं मिल रहा है। वहीं दिल्ली के उपराज्यपाल का कहना है कि हरियाणा दिल्ली को पूरा पानी दे रहा है। उनका दावा है कि



दिल्ली सरकार मुनक नहर की मरम्मत नहीं करा रही है और वह टैकरों के जरिये पानी की चोरी करवा रही है।

सवाल यह है कि जब हरियाणा द्वारा दिल्ली को पूरा पानी दिया जा रहा है तो दिल्ली पानी की किलत क्यों झेल रही है। दरअसल, यह मसला भाजपा और आप के राजनीतिक अस्तित्व की लड़ाई में उलझा हुआ है। जिसमें दिल्ली की जनता पिसने को मजबूर है। इसी के चलते दिल्ली के अनेक विकास कार्य भी लटके पड़े हैं। हां, इतना जरूर है कि इस सबके लिए वह चाहे निगम का मसला हो, मोहल्ला क्लीनिक का मसला हो, स्कूलों का हो या फिर जनहित के कार्यों या फिर बजट या अधिकारों का हो, केन्द्र की भाजपा सरकार, दिल्ली के उपराज्यपाल और दिल्ली की आप सरकार एक-दूसरे के सिर पर ठीकरा फोड़ती रही है।

हकीकत यह है कि दिल्ली को हरियाणा से कुल 1,050 क्यूसेक पानी मिलना चाहिए। एक मई से 22 मई तक हरियाणा मुनक नहर के कैरियर लाइन नहर यानी सीएलसी में 719 क्यूसेक और दिल्ली सब ब्रांच यानी डीएसबी नहर में 350 क्यूसेक पानी छोड़ा गया था। मतदान के दो से तीन दिन पहले इसे 91 क्यूसेक तक कम कर दिया गया।

सुप्रीम कोर्ट के निर्देश पर हिमाचल अतिरिक्त पानी भी छोड़ने को तैयार है। जहां तक मुनक नहर की मुरम्मत और रख-रखाव का सवाल है, इसका ठीकरा दिल्ली सरकार पर फोड़ा नहीं लगता। नहर की मुरम्मत और उसके रख-रखाव का जिम्मा हरियाणा सरकार के सिंचाई विभाग का है। हकीकत में मुनक नहर से पानी बवाना लाया जाता है। बवाना से पहले यदि पानी की चोरी होती है तो इसके लिए कौन जिम्मेदार है? लेकिन दिल्ली भाजपा अध्यक्ष का कहना है कि दिल्ली सरकार के संरक्षण में पानी की चोरी अब भी जारी है जिसकी वजह से दिल्ली की जनता पानी का संकट झेल रही है। उनकी मानें तो मुनक नहर से काकोरी आते-आते 20 फीसदी पानी की चोरी हो रही है।

कम पानी आने से वजीरबाद जलाशय का स्तर सामान्य से पांच फीट नीचे आ जाना खतरे का संकेत है। दिल्ली में जगह-जगह लगाये गये वाटर एटीएम के जरिये भीषण गर्मी में लोगों की प्यास बुझाने के दावे खोखले साबित हुए हैं। हकीकत यह है कि वे खराब पड़े हैं। कहीं तो वे ठीक से काम ही नहीं कर रहे हैं, कहीं उन पर ताले लटके हैं। जहां तक वाटर ट्रीटमेंट प्लांट की बात है, हाल फिलहाल नौ वाटर ट्रीटमेंट प्लांट अपनी क्षमता से ज्यादा काम कर रहे हैं।

असली समस्या तो पानी की मांग और उपलब्धता की है। दिल्ली में पानी की मांग 1296 एमजीडी से 1300 एमजीडी तक है लेकिन सप्लाई केवल 998.8 से 1000 एमजीडी ही है। स्वाभाविक है 300 एमजीडी पानी की कमी तो बरकरार रहती ही है। जल संकट के मद्देनजर कुल 587 ट्र्यूबवैल लगाने की योजना थी। पहले चरण में इनमें से कुछ सक्रिय भी हैं, जिनसे 19 एमजीडी पानी मिल रहा है। जबकि दूसरे चरण में 2590 ट्र्यूबवैल के लिए 1800 करोड़ की राशि की दरकार थी जिसकी अभी तक मजूरी नहीं मिली है। फिर दिल्ली सरकार के जल बोर्ड की क्षमता केवल 90 करोड़ गैलन पानी के ट्रीटमेंट की ही है।

दरअसल, दिल्ली सरकार पानी के ट्रीटमेंट और स्टोरेज पर पूरी तरह ध्यान नहीं दे पा रही है। ऐसी स्थिति में दिल्ली सरकार दिल

पेड़ लगाना यकीनन बहुत जरूरी है और हम सभी को इसे नियमित रूप से करना चाहिए। यह हमारे और हमारे प्लैनेट के लिए भी अच्छा है। इससे कार्बन को कम करने, आॉक्सीजन के उत्पादन, जैव विविधता को बनाए रखने, मिट्टी की स्थिरता और जल-चक्र के रेगुलेशन में मदद मिलती है। अभी 10 दिन पहले ही, मैंने अपने 50वें जन्मदिन पर 50 पेड़ लगाए हैं।

लेकिन इससे पहले कि हम इस विश्व पर्यावरण दिवस पर पेड़ लगाने के बारे में सोचें, थोड़ा रुकिए! जैसे-जैसे हम 5 जून (विश्व पर्यावरण दिवस) के करीब पहुंच रहे हैं, सामाजिक संगठनों, प्रभावशाली लोगों, राजनेताओं, कॉर्पोरेशन और व्यक्तियों को पेड़ लगाने की वकालत करते हुए देखना उत्साहजनक है।

यह अच्छा है, लेकिन पर्याप्त नहीं है। यह सोचना कि पौधे लगाने से पर्यावरण-क्षण, वायु और जल प्रदूषण, ग्लोबल वार्मिंग और जलवायु परिवर्तन जैसी मौजूदा ज्वलंत समस्याओं का समाधान हो जाएगा, एक गलती है। अनेक युगों से, पृथ्वी की सतह और महासागरों ने स्वाभाविक रूप से कार्बन डाइऑक्साइड (सीओटू) और अन्य ग्रीनहाउस गैसों का उत्सर्जन और अवशोषण किया है, जिससे वायुमंडल के भीतर एक नाजुक संतुलन बना रहा है।

यह प्राकृतिक चक्र मनुष्यों के अस्तित्व में आने से पहले का है। औद्योगिकरण की शुरुआत से पहले तक - यानी लगभग 1850 ई. में सीओटू उत्सर्जन और अवशोषण की दर संतुलन में थी। लेकिन उसके बाद हमने कोयला, पेट्रोल, डीजल और एलपीजी जलाना शुरू कर दिया, जिससे सीओटू उत्सर्जन में उल्लेखनीय



वृद्धि हुई है।

वर्तमान में, मानवीय गतिविधियां सालाना लगभग 38 अरब टन अतिरिक्त सीओटू का वायुमंडल में योगदान कर रही हैं। जब यह प्रवाह पृथ्वी की इसे अवशोषित करने की क्षमता को पार कर जाता है, तो प्राकृतिक कार्बन चक्र का नाजुक संतुलन बिगड़ जाता है। पृथ्वी की सतह और महासागर, साथ ही पौधे और पेड़, सीओटू को अवशोषित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

हालांकि औद्योगिक गतिविधियों से सीओटू उत्सर्जन की विशाल मात्रा इसे प्रभावी रूप से संतुलित करने की उनकी क्षमता को प्रभावित करती है। नतीजतन, वातावरण में सीओटू अवशोषित करता है। मान लें कि

प्रो. चेतन सिंह सोलंकी,
आईआईटी बांग्ला में प्रोफेसर,
संस्थापक, एनर्जी रसायन फाउंडेशन

की अधिकता हो जाती है, जिससे ग्रीनहाउस प्रभाव होता है। पूर्व-औद्योगिक युग की तुलना में वर्तमान में वायुमंडल में 52 प्रतिशत अतिरिक्त सीओटू है। इसका मतलब है कि उसमें प्लैनेट की गर्मी को ट्रैप करने की 52 प्रतिशत अतिरिक्त क्षमता है।

वर्तमान की हीटवेब इसी अतिरिक्त गर्मी का परिणाम है। एक पेड़ - आमतौर पर 10-15-20 साल के विकास के बाद - अपने जीवनकाल के दौरान लगभग 1 से 2 टन सीओटू अवशोषित करता है। मान लें कि

10 वर्षों में एक पेड़ लगभग 1 टन सीओटू सोखता है तो मानवीय गतिविधियों के कारण प्रतिवर्ष उत्सर्जित हानि वाली अतिरिक्त 38 अरब टन सीओटू को संतुलित करने के लिए हमें हर साल लगभग 380 अरब पेड़ लगाने होंगे।

अगर मानें कि एक पेड़ के

लिए लगभग 10 वर्ष मीटर क्षेत्र की आवश्यकता होती है तो प्रति वर्ष 380 अरब पेड़ लगाने के लिए लगभग 30.8 लाख वर्ग किलोमीटर यानी भारत के आकार से भी बड़े क्षेत्र की आवश्यकता होगी, और वह भी हर साल। व्यक्तियों के लिए भी, वृक्षारोपण के माध्यम से सीओटू की भरपाई करना संभव नहीं होगा। ऐसी जिसे सामान्य स्रोतों से होने वाले

(ये लेखक के अपने विचार हैं)

तीन माह की फसल, अत्याधिक मिठास के साथ पाइन एप्ल का भी स्वाद

ताइवानी तरबूज मुनाफे की खेती, पंजाब के कंडी क्षेत्र में घोली मिठास

पंजाब के होशियारपुर ज़िले में अब तक किसान देसी तरबूज की खेती किया करते थे, लेकिन बागवानी विभाग की तरफ से फल व सब्जियों पर सब्सिडी उपलब्ध

2 एकड़ में ताइवानी तरबूज की खेती की। ताइवान के खरबूजे और तरबूज की मिठास और स्वाद ने सभी फलों को पीछे छोड़ दिया। ताइवान का आरोही तरबूज अंदर

15 से 20 रुपए से लेकर 40-50 रुपए किलो तक बिकता है। कीट से फसल को बचाव के लिए यंत्र लगाए हैं। यह फसल कम लागत में अच्छा पैसा दे रही है।

बागवानी विभाग कंगमाई में तैनात असिस्टेंट डायरेक्टर डॉ. जसपाल सिंह व एक्सपर्ट डॉ. लखबीर सिंह ने बताया कि ताइवानी तरबूज और खरबूजे की अग्रेती प्रजाति के बीज की हाईटेक नर्सरी में पौध तैयार होती है। दिसंबर से जनवरी में खरबूजा और तरबूज की रोपाई होती है। 90 दिन में अप्रैल में फसल तैयार होती है। ताइवान प्रजाति के खरबूजा और तरबूज की ओर होशियारपुर ज़िले के किसान आकर्षित होकर फसल में मुनाफा कमा रहे हैं। ताइवानी प्रजाति देसी वैरायटी से अच्छी और स्वादिष्ट है।

होशियारपुर में येलो तरबूज की खेती करने के प्रति किसानों में रुझान बढ़ा है। येलो तरबूज में लाल तरबूज के टेस्ट के साथ पाइप एप्ल का टेस्ट भी आता है। येलो तरबूज लाल वाले से ज्यादा पानी की पूर्ति करता है। अगर कोई खाना नहीं खा पाता तो येलो तरबूज खाकर वह अपनी भूख मिटा सकता है। ताइवानी तरबूज 4 किलो से 10 किलो वजनी होता है।

ज़िले के कंगमाई के किसान जयपाल के अनुसार, पिछले साल जिसके कुकुलों उसने इस बार करीब 7 से 10 रुपए प्रति किलो में मिल जाता है। मगर ताइवान का तरबूज और खरबूजा कम से कम

से पीला है, स्वाद में अन्नानास जैसा है। उन्नत तरबूज अंदर से लाल और मीठा है। मृदला खरबूजा अंदर से पीला, बाहर से जालीदार है और यह पूर्वी और पश्चिमी हवाओं में मीठा रहता है। ताइवान के तरबूज और खरबूजे की फसल 30 दिन की है। एक एकड़ में करीब 20 हजार रुपए लागत आती है। इसमें पौध तैयार करने, पानी लगाने, फल तुड़ाई में मज़दूरी की लागत शामिल है। सामान्य तरबूज और खरबूजा

कार्बन उत्सर्जन पर विचार करें।

एक टन का एयर कंडीशनर दिन में सिर्फ 8 घंटे चलने पर एक वर्ष में 2 टन से अधिक सीओटू उत्सर्जित करता है। इसलिए सिर्फ एक एसी के कार्बन फुटप्रिंट को संतुलित करने के लिए हमें सालाना 1 से 2 पेड़ लगाने की जरूरत है। वास्तव में उत्सर्जन की भरपाई के लिए पेड़ लगाने की नहीं, बल्कि 10-15 साल तक उनका पालन-पोषण करने की भी जरूरत है।

यदि कोई व्यक्ति वाहन का उपयोग करता है और प्रतिदिन सिर्फ 2 लीटर पेट्रोल या डीजल जलाता है, तो वह एक वर्ष में 2 टन से अधिक सीओटू उत्सर्जित करने के लिए जिम्मेदार होगा। इस प्रकार, वाहनों के उपयोग के पर्यावरणीय प्रभाव को कम करने के लिए भी सालाना 1 से 2 नए पेड़ लगाना होंगे।

आधुनिक युग में, व्यक्ति प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से बहुत अधिक मात्रा में ऊर्जा और सामग्रियों का उपभोग करते हैं। केवल पेड़ लगाकर पर्यावरण पर पड़ने वाले उनके प्रभाव को कम करने का प्रयास लगभग असंभव होगा। हर किसी के लिए आवश्यक मात्रा में पेड़ लगाना और उनकी देखभाल करना संभव नहीं है, न ही इस तरह के प्रयासों के लिए पर्याप्त जगह उपलब्ध है।

इससे ज्यादा समझदारी का दृष्टिकोण तो यह होगा कि 'रोकथाम इलाज से बेहतर है!' यानी हमें पर्यावरण-संबंधी चुनौतियों का प्रभावी ढंग से समाधान करने के लिए कार्बन उत्सर्जन और संसाधनों की खपत को कम करने के व्यापक उपायों पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए।

(ये लेखक के अपने विचार हैं)

पटियाला ज़िले के शेरगढ़ गांव का किसान नवदीप सिंह बरसों से विदेशी नस्ल की गायों को विकसित करने के काम में जुटा आयरसायर गाय देती है 8.5 फैट तक का दूध, 50 डिग्री सैलिसियस तापमान झेलने में भी सक्षम

पटियाला के शेरगढ़ गांव का किसान नवदीप सिंह लंबे समय से पंजाब में विदेशी आयरसायर नस्ल की गायों को विकसित करने का काम कर रहा है। पिछले दिनों यहां खेतीबाड़ी विभाग के किसान मेले में अपनी विदेशी नस्ल की गायों के सीरम की प्रदर्शनी लगाने पहुंचे किसान नवदीप सिंह ने बताया कि आयरसायर लाल और सफेद रंग की गायों की एक अलग नस्ल है। इसके लिए उसने पहली बार करीब 12 साल पहले कनाडा से सीरम आयात करवाया था। तब उसने अपने यहां इस नस्ल की गायों को तैयार करवाया। अब इसका सीरम सूबे के अलग-अलग ज़िलों में जाकर किसानों को देकर इस नस्ल को विकसित कर रहे हैं। चूंकि यह नस्ल पंजाब के मौसम के हिसाब से गर्मी-सर्दी में अपने आपको आसानी से ढाल लेती है और कम खर्च में बढ़िया क्वालिटी का दूध (साढ़े 4 से साढ़े 8 फैट तक) प्रदान करती है, इसलिए किसान इसे पसंद कर रहे हैं। कनाडा, आयरलैंड में इस गाय का सीरम करीब 2 हजार रुपए से 4500 रुपए (भारतीय करंसी के हिसाब से) बिकता है। वह सिर्फ 200 रुपए में किसानों को उपलब्ध करवा रहे हैं। पिछले साल उन्होंने राज्य में 1 हजार से ज्यादा सीरम किसानों को मुहैया करवाया।

59 लीटर तक देती है दूध

यह लाल भूरे सफेद रंग का पशु है। इन गायों की इम्युनिटी बहुत ज्यादा होती है और यह जल्दी-जल्दी बीमार नहीं होती है। इन गायों को 45 से 50 डिग्री तापमान में आसानी से रखा जा सकता है। ये गांड़ गर्मी में बिना शेड, पंखे के भी रह लेती हैं। इनकी दूध देने की क्षमता प्रति दिन 40 से 59 लीटर तक होती है। इन गायों के दूध में उच्च क्वालिटी का प्रोटीन होता है। इनमें मैस्टाइटिस बीमारी की समस्या बिल्कुल शून्य के बराबर होती है। इन गायों में लंगड़ेपन की समस्या नहीं आती और इनका शारीरिक ढांचा, खुर, टांगे बहुत मज़बूत होती है।

सोशल मीडिया पर बनाया प्लेटफार्म

किसान नवदीप सिंह के अनुसार इन गायों का सीरम बेचने के लिए सोशल मीडिया पर प्लेटफार्म बनाया है। पंजाब के अलावा दूरदराज के क

स्विट्जरलैंड के सबसे सुंदर गांव में एंट्री फीस की देयती

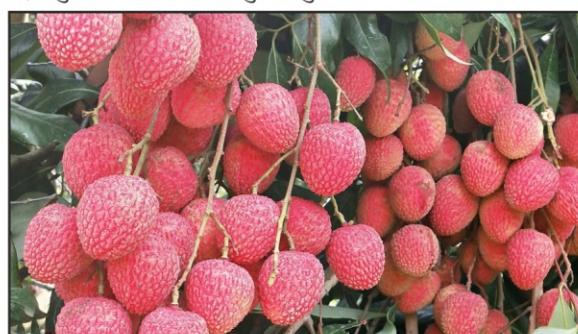
लॉटरबूनेन गांव को स्विट्जरलैंड का सबसे खूबसूरत गांव कहा जाता है। यहां के हरे-भरे चारागाह, ऊंचे-ऊंचे पहाड़ों से गिरता बड़ा सुंदर झरना और झरने के पास बनते इंद्रधनुष को देखने के लिए हर साल लाखों पर्यटक आते हैं। कोरोना महामारी खत्म होने के बाद यहां आने वाले पर्यटकों की संख्या बहुत तेजी से बढ़ी है। इस गांव में आने के लिए एक ही सड़क है। पर्यटकों की बढ़ती संख्या के चलते वेनिस और क्योटों जैसे शहरों की तरह लॉटरबूनेन गांव भी ओवर ट्रॉफिक का शिकार हो गया है। अब सरकार और प्रशासन इसे नियंत्रित करने के उपायों के बारे में सोच रहे हैं। करीब 2400 लोगों की आबादी वाले इस गांव में हर रोज़ 6 हज़ार ट्रूरिस्ट आते हैं। पीक सीज़न में इस गांव में हर रोज़ 20 हज़ार से ज्यादा पर्यटक पहुंचते हैं। बाहर से आने वाले पर्यटकों की संख्या से इस गांव के लोग परशान हो गए हैं। पर्यटकों को नियंत्रित करने के लिए प्रवेश शुल्क लगाने की तैयारी हो रही है। पहले चरण में यहां स्थित ब्रिएंज लेक के पास 500 रुपए का सेल्फी टैक्स लगाया गया है।

हर रोज़ 6
हज़ार लोगों के
आने से जाम



लीची की बागवानी में बढ़ रहा बटाला का क्षेत्र

गुरदासपुर और बटाला का ग्रामीण क्षेत्र बहुत तेज़ी से लीची की बागवानी में उभर रहा है। लीची की बागवानी करने वाले किसान इसे मुनाफ़े का सौदा बता रहे हैं। इतना ही नहीं, वह किसान साथियों से गेहूं और धान के फसली-चक्र से बाहर निकलने की अपील कर रहे हैं। ज़हीर खान ने करीब 50 एकड़ से ज्यादा ज़मीन ठेके पर लेकर लीची की बागवानी की है। इसका असर यह हो रहा है कि कई किसान



उनसे सम्पर्क करके अपनी ज़मीन पर लीची के बाग लगाने के लिए आगे आ रहे हैं। बटाला-गुरदासपुर बाईपास पर

50 एकड़ ज़मीन ठेके पर लेकर लीची की बागवानी कर जहीर खान

कंडियाल के निकट जहीर खान ने बताया कि वह मूलरूप से सहारनपुर (उत्तर प्रदेश) के रहने वाले हैं। पिछले 40 साल से गुरदासपुर और बटाला में की जाए। इस इलाके में देहरादून और कलकत्ता किस्म की लीची की पैदावार की जाती है। देहरादून की लीची पहले तैयार हो जाती है और कलकत्ता लीची बाद में होती है। कलकत्ता लीची का फल बढ़िया होता है और भरपूर पैदावार होती है। यहां पैदा होने वाली लीची की इतनी मांग है कि मांग कभी टूटती नहीं। फल की गुणवत्ता के अनुसार इसकी ग्रेडिंग की जाती है। ऐ-ग्रेड की लीची विवरणों में एक्सपोर्ट होती है।

ज़मीन ठेके पर लेकर लीची की बागवानी कर रहे हैं। लीची की बागवानी एक में भेजी जाती है और बाकी की अत्यंत मुनाफ़े का सौदा है। बशर्ते लीची लोकल मार्केट में आसानी से पौधों की सही देखभाल और परवरिश

लीची की देखभाल की हर समय जरूरत

लीची के पेड़ की देखभाल की हर समय जरूरत रहती है, समय पर खाद्यानी दिया जाता है। जैसे ही पेड़ पर फल आना शुरू होता है, तो पानी की जरूरत ज्यादा पड़ती है, सही मात्रा में पानी मिलने से पेड़ फल से लद जाते हैं। जहीर खान ने बताया कि वह 1984 से गुरदासपुर-बटाला के इलाकों में लीची की बागवानी करते चले आ रहे हैं। उनकी नसरी भी है, जहां हाई क्वालिटी की लीची के पौधे उपलब्ध रहते हैं। उन्होंने बताया कि चीनी की बागवानी के लिए पंजाब के हर क्षेत्र की ज़मीन बढ़िया है। लेकिन पठानकोट-गुरदासपुर और बटाला की ज़मीन इसके लिए अति उत्तम है। इस ज़मीन की खासियत है कि इस ज़मीन में अगर आप उल्टा पौधा भी बो दें, तो वह सीधा खड़ा हो जाता है, लेकिन देखभाल अत्यंत जरूरी है।

गेहूं-धान से ज्यादा लाभ

उन्होंने किसानों से अपील की कि वह गेहूं व धान के फसली-चक्र से निकल कर बागवानी अपनाएं। बागवानी में गेहूं व धान से कहीं ज्यादा मुनाफ़ा रहता है। इस इलाके की ज़मीन बागवानी के लिए बहुत मुफीद है। उन्होंने लीची के अलावा इस इलाके में कुछ जगहों पर आड़ की शाने पंजाब किस्म, अमरुद की बर्फखाना किस्म का फल साइज में बड़ा होता है और दोनों किस्में भरपूर पैदावार देती है।

बीजोपचार

अच्छी फसलों का मूल आधार

बीजोपचार के लाभ

- ★ अधिक अंकुरण
- ★ अधिक प्रबल पौधे
- ★ आरंभिक बिमारियों का प्रभावी नियंत्रण
- ★ स्वरथ पौधों की संख्या ज्यादा



देश के सभी किसान, पढ़ें होकर होशियार
अच्छी पैदावार तभी होगी, जब बीजों का हो सही उपचार